पाठ – 3.4

पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद

जीवन परिचय

छायावाद के जन्मदाता एवं आधार स्तंभ श्री जयशंकर प्रसाद जी का जन्म संवत् 1946 अर्थात् सन् 1889 ईसवीं को काशी में हुआ था। उनमें काव्य रचना की प्रतिभा जन्मजात थी। वे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे जिनका प्रमाण विविध–विधाओं में सृजित उनकी साहित्यिक रचनाएँ हैं। वे हिन्दी के प्रसिद्ध गीतकार भी थे। उनकी रचनाओं का मुख्य विषय प्रेम एवं आनंद रहा है, साथ ही प्रकृति चित्रण उनकी रचनाओं की महत्वपूर्ण विशेषता है। तत्सम शब्दों की बहुलता उनकी भाषा में देखी जा सकती है। प्रतीकात्मकता तथा बिंब विधान उनकी शैली की विशिष्टता है। छोटे–छोटे वाक्यों में गंभीर भाव भरना, उनमें संगीत और लय का विधान करना उनकी शैली को सरस, स्वाभाविक, प्रभावपूर्ण, ओजमयी और चुटीली बना है।

'कामायनी', 'आँसू', 'झरना', 'लहर', 'प्रेम–पथिक', 'कानन कुसुम' उनके प्रमुख काव्य हैं। उन्होंने 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त' और 'अजातशत्रु' नाटक लिखे हैं। उपंयास 'कंकाल', 'तितली','इरावती' के अतिरिक्त कहानी संग्रह के रूप में 'आँधी', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप' और 'देवरथ' की भी इन्होंने रचना की है।

महाकाव्य कामायनी के कारण इन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली। हिन्दी साहित्य जगत इनका सदैव ऋणी रहेगा।

आर्द्रा नक्षत्र; आकाश में काले–काले बादलों की घुमड़, जिसमें देव–दुंदुभि का गंभीर घोष। प्राची के एक निरभ्र कोने से स्वर्ण पुरुष झाँकने लगा था, दिखने लगी महाराज की सवारी। शैलमाला के अंचल में समतल उर्वरा भूमि से सोंधी बास उठ रही थी। नगर–तोरण से जयघोष हुआ, भीड़ में गजराज का चामरधारी शुण्ड उन्नत दिखाई पड़ा। हर्ष और उत्साह का समुद्र हिलोर भरता हुआ आगे बढ़ने लगा।

प्रभात की हेम किरणों से अनुरंजित नन्हीं नन्हीं बूँदों का एक झोंका स्वर्ण मल्लिका के समान बरस पड़ा। मंगल सूचना से जनता ने हर्ष ध्वनि की।

रथों, हाथियों और अश्वारोहियों की पंक्ति थी। दर्शकों की भीड़ भी कम न थी। गजराज बैठ गया, सीढ़ियों से महाराज उतरे। सौभाग्यवती और कुमारी सुंदरियों के दो दल, आम्रपल्लवों से सुशोभित मंगल कलश और फूल, कुंकुम तथा खीलों से भरे थाल लिए, मधुर गान करते हुए आगे बढ़े।

महाराज के मुख पर मधुर मुस्कान थी। पुरोहित वर्ग ने स्वस्त्ययन किया। स्वर्ण रंजित हल की मूठ पकड़कर महाराज ने जुते हुए सुन्दर पुष्ट बैलों को चलने का संकेत किया। बाजे बजने लगे। किशोरी कुमारियों ने खीलों और फूलों की वर्षा की।

कोशल का यह उत्सव प्रसिद्ध था। एक दिन के लिए महाराज को कृषक बनना पड़ता। उस दिन इन्द्र पूजन की धूम–धाम होती; गोठ होती। नगर–निवासी उस पहाड़ी भूमि में आनंद मनाते। प्रतिवर्ष कृषि का यह महोत्सव उत्साह से सम्पन्न होता; दूसरे राज्यों से भी युवक राजकुमार इस उत्सव में बड़े चाव से आकर योग देते।

मगध का एक राजकुमार अरुण अपने रथ पर बैठा बड़े कुतूहल से यह दृश्य देख रहा था। बीजों का एक थाल लिए कुमारी मधुलिका महाराज के साथ थी। बीज बोते हुए महाराज जब हाथ बढ़ाते, तब मधुलिका उनके सामने थाल कर देती। यह खेत मधुलिका का था, जो इस साल महाराज की खेती के लिए चुना गया था; इसलिए बीज देने का सम्मान मधुलिका को ही मिला। वह कुमारी थी, सुंदरी थी। कौशेय वसन उसके शरीर पर इधर–उधर लहराता हुआ स्वयं शोभित हो रहा था। वह कभी उसे सँभालती और कभी अपनी रूखी अलकों को। कृषक बालिका के शुभ्र भाल पर श्रमकणों की भी कमी न थी, वे सब बरौनियों में गुँथे जा रहे थे किन्तु महाराज को बीज देने में उसने शिथिलता नहीं की। सब लोग महाराज का हल चलाना देख रहे थे– विस्मय से, कुतुहल से। और अरुण देख रहा था कृषक कुमारी मधुलिका को। आह! कितना भोला सौंदर्य! कितनी सरल चितवन!

उत्सव का प्रधान कृत्य समाप्त हो गया। महाराज ने मधुलिका के खेत को पुरस्कृत किया, थाल में कुछ स्वर्णमुद्राएँ। वह राजकीय अनुग्रह था। मधुलिका ने थाली सिर से लगा ली; किन्तु साथ ही उन स्वर्णमुद्राओं को महाराज पर न्यौछावर करके बिखेर दिया। मधुलिका की उस समय की ऊर्जस्वित मूर्ति लोग आश्चर्य से देखने लगे! महाराज की भृकुटी भी जरा चढ़ी थी कि मधुलिका ने सविनय कहा– ''देव ! यह मेरे पितृ पितामहों की भूमि है। इसे बेचना अपराध है इसलिए मूल्य स्वीकार करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है।'' महाराज के बोलने के पहले ही वृद्ध मंत्री ने तीखे स्वर से कहा – ''अबोध ! क्या बक रही है? राजकीय अनुग्रह का तिरस्कार! तेरी भूमि से चौगुना मूल्य है; फिर कोशल का तो यह सुनिश्चित राष्ट्रीय नियम है। तू आज से राजकीय रक्षण पाने की अधिकारिणी हुई, इस धन से अपने को सुखी बना।''

''राजकीय रक्षण की अधिकारिणी तो सारी प्रजा है मंत्रिवर! महाराज को भूमि समर्पण करने में तो मेरा कोई विरोध न था और न है; किन्तु मूल्य स्वीकार करना असम्भव है''– मधुलिका उत्तेजित हो उठी थी।

महाराज के संकेत करने पर मंत्री ने कहा '' देव! वाराणसी युद्ध के अन्यतम वीर सिंहमित्र की एक मात्र कन्या है।'' महाराज चौंक उठे– ''सिंह मित्र की कन्या! जिसने मगध के सामने कोशल की लाज रख ली थी, उसी वीर की मधुलिका कन्या है ?''

''हाँ, देव!'' मंत्री ने सविनय कहा।

''इस उत्सव के परंपरागत नियम क्या हैं, मंत्रिवर?''– महाराज ने पूछा।

''देव! नियम तो बहुत साधारण हैं। किसी भी अच्छी भूमि को इस उत्सव के लिए चुनकर नियमानुसार पुरस्कार स्वरूप उसका मूल्य दे दिया जाता है। वह भी अत्यंत अनुग्रहपूर्वक अर्थात् भू–संपत्ति का चौगुना मूल्य उसे मिलता है। उस खेती को वही व्यक्ति वर्ष भर देखता है। वह राजा का खेत कहा जाता है।''

महाराज को विचार संघर्ष से विश्राम की अत्यंत आवश्यकता थी। महाराज चुप रहे। जयघोष के साथ सभा विसर्जित हुई। सब अपने–अपने शिविरों मे ंचले गए, किन्तु मधुलिका को उत्सव में फिर किसी ने न देखा। वह अपने खेत की सीमा पर विशाल मधूक–वृक्ष के चिकने हरे पत्तों की छाया में अनमनी चुपचाप बैठी रही।

000

रात्रि का उत्सव अब विश्राम ले रहा था। राजकुमार अरुण उसमें सम्मिलित नहीं हुआ। वह अपने विश्राम भवन में जागरण कर रहा था, आँखों में नींद न थी। प्राची में जैसी गुलाली खिल रही थी, वही रंग उसकी आँखों में था। सामने देखा तो मुँडेर पर कपोती एक पैर पर खड़ी पंख फैलाए अँगड़ाई ले रही थी। अरुण उठ खड़ा हुआ। द्वार पर सुसज्जित अश्व था। वह देखते–देखते नगरतोरण पर जा पहुँचा। रक्षक गण ऊँघ रहे थे, अश्व के पैरों के शब्द से चौंक उठे।

युवक कुमार तीर सा निकल गया। सिंधु देश का तुरंग प्रभात के पवन से पुलकित हो रहा था। घूमता–घूमता अरुण उसी मधूक वृक्ष के नीचे पहुँचा, जहाँ मधुलिका अपने हाथ पर सिर धरे हुए खिन्न निद्रा का सुख ले रही थी।

अरुण ने देखा, एक छिन्न माधवी लता वृक्ष की शाखा से च्युत् होकर पड़ी है। सुमन मुकुलित, भ्रमर निस्पंद थे। अरुण ने अपने अश्व को मौन रहने का संकेत किया, उस सुषमा को देखने के लिए; परंतु कोकिल बोल उठी। जैसे उसने अरुण से प्रश्न किया– छि! कुमारी के सोए हुए सौंदर्य पर दृष्टिपात करने वाले धृष्ट, तुम कौन? मधुलिका की आँखे खुल पड़ीं। उसने देखा, एक अपरिचित युवक। वह संकोच से उठ बैठी। ''भद्रे ! तुम्हीं न कल के उत्सव की संचालिका रही हो ?''

''उत्सव ! हाँ, उत्सव ही तो था।''

''कल उस सम्मान .....''

''क्यों आपको कल का स्वप्न सता रहा है? भद्र! आप क्या मुझे इस अवस्था में संतुष्ट न रहने देंगे?''

''मेरा ह्रदय तुम्हारी उस छवि का भक्त बन गया है, देवि।''

''मेरे उस अभिनय का, मेरी विडंबना का। आह! मनुष्य कितना निर्दय है, अपरिचित! क्षमा करो, जाओ अपने मार्ग।''

''सरलता की देवी! मैं मगध का राजकुमार, तुम्हारे अनुग्रह का प्रार्थी हूँ, मेरे ह्रदय की भावना अवगुंठन में रहना नहीं जानती। उसे अपनी .....।''

''राजकुमार! मैं कृषक बालिका हूँ। आप नंदनबिहारी और मैं पृथ्वी पर परिश्रम करके जीनेवाली। आज मेरी स्नेह की भूमि पर से मेरा अधिकार छीन लिया गया है। मैं दुःख से विकल हूँ; मेरा उपहास न करो।''

''मै कौशल नरेश से तुम्हारी भूमि तुम्हें दिलवा दूँगा।''

''नहीं, वह कोशल का राष्ट्रीय नियम है। मैं उसे बदलना नहीं चाहती, चाहे उससे मुझे कितना ही दुःख हो।''

''तब तुम्हारा रहस्य क्या है?''

''यह रहस्य मानव हृदय का है, मेरा नहीं। राजकुमार, नियमों से यदि मानव हृदय बाध्य होता, तो आज मगध के राजकुमार का हृदय किसी राजकुमारी की ओर न खिंचकर एक कृषक बालिका का अपमान करने न आता।'' मधुलिका उठ खड़ी हुई।

चोट खाकर राजकुमार लौट पड़ा। किशोर किरणों में उसका रत्नकिरीट चमक उठा। अश्व वेग से चला जा रहा था और मधुलिका निष्ठुर प्रहार करके क्या स्वयं आहत न हुई ? उसके हृदय में टीस सी होने लगी। वह सजल नेत्रों से उड़ती हुई धूल देखने लगी।

000

मधुलिका ने राजा का प्रतिपादन, अनुग्रह नहीं लिया। वह दूसरे खेतों में काम करती और चौथे पहर रूखी–सूखी खाकर पड़ी रहती। मधूक वृक्ष के नीचे छोटी–सी पर्णकुटीर थी। सूखे डंठलों से उसकी दीवार बनी थी। मधुलिका का वही आश्रम था। कठोर परिश्रम से जो रूखा–सूखा अन्न मिलता, वही उसकी साँसों को बढ़ाने के लिए पर्याप्त था।

दुबली होने पर भी उसके अंग पर तपस्या की कांति थी। आसपास के कृषक उसका आदर करते। वह एक आदर्श बालिका थी। दिन, सप्ताह, महीने और वर्ष बीतने लगे।

000

शीतकाल की रजनी, मेघों से भरा आकाश, जिसमें बिजली की दौड़–धूप। मधुलिका का छाजन टपक रहा था। ओढ़ने की कमी थी। वह ठिठुरकर एक कोने में बैठी थी। मधुलिका अपने अभाव को आज बढ़ाकर सोच रही थी। जीवन से सामंजस्य बनाए रखनेवाले उपकरण तो अपनी सीमा निर्धारित रखते हैं; परन्तु उनकी आवश्यकता और कल्पना भावना के साथ बढ़ती–घटती रहती है। आज बहुत दिनों बाद उसे बीती हुई बात स्मरण हुई–दो, नहीं–नहीं तीन वर्ष हुए होंगे, इसी मधूक के नीचे प्रभात में, तरुण राजकुमार ने क्या कहा था?

वह अपने हृदय से पूछने लगी – उन चाटुकारी शब्दों को सुनने के लिए उत्सुक–सी वह पूछने लगी–क्या कहा था? दुखदग्ध हृदय उन स्वप्न सी बातों को स्मरण रख सकता था! और स्मरण ही होता, तो भी कष्टों की इस काली निशा में वह कहने का साहस करता? हाय री विडंबना!

आज मधुलिका उस बीते हुए क्षण को लौटा लेने के लिए विकल थी। दारिद्रय की ठोकरों ने उसे व्यथित और अधीर कर दिया है। मगध की प्रासाद– माला के वैभव का काल्पनिक चित्र–उन सूखे डंठलों के रंध्रों से, नभ में बिजली के आलोक में नाचता हुआ दिखाई देने लगा। खिलाड़ी शिशु जैसे – श्रावण की संध्या में जुगनू को पकड़ने के लिए हाथ लपकता है, वैसे ही मधुलिका मन ही मन कह रही थी। अभी वह निकल गया। ''वर्षा ने भीषण रूप धारण किया। गड़बड़ाहट बढ़ने लगी, ओले पड़ने की संभावना मधुलिका अपनी जर्जर झोपड़ी के लिए काँप उठी। सहसा बाहर कुछ शब्द हुआ–

''कौन है यहाँ? पथिक को आश्रय चाहिए।''

मधुलिका ने डंठलों का कपाट खोल दिया। बिजली चमक उठी। उसने देखा, एक पुरुष घोड़े की डोर पकड़े खड़ा है। सहसा वह चिल्ला उठी – 'राजकुमार!'

'मधुलिका?' – आश्चर्य से युवक ने कहा।

एक क्षण के लिए सन्नाटा छा गया। मधुलिका अपनी कल्पना को सहसा प्रत्यक्ष देखकर चकित हो गई– ''इतने दिनों के बाद आज फिर!''

अरुण ने कहा –''कितना समझाया मैंने –परन्तु.....''

मधुलिका अपनी दयनीय अवस्था पर संकेत करने देना नहीं चाहती थी। उसने कहा– ''और आज आपकी यह क्या दशा है?''

सिर झुकाकर अरुण ने कहा– ''मै, मगध का विद्रोही, निर्वासित, कोशल में जीविका खोजने आया हूँ।''

मधुलिका उस अंधकार में हँस पड़ी। मगध के विद्रोही राजकुमार का स्वागत करे एक अनाथिनी कृषक बालिका, यह भी एक विडंबना है, तो भी मैं स्वागत के लिए प्रस्तुत हूँ।''

000

शीतकाल की निस्तब्ध रजनी, कुहरे से चाँदनी, हाड़ कँपा देने वाला समीर, तो भी अरुण और मधुलिका पहाड़ी गह्वर के द्वार पर वटवृक्ष के नीचे बैठे हुए बातें कर रहे हैं। मधुलिका की वाणी में उत्साह था; किन्तु अरुण जैसे अत्यंत सावधान होकर बोलता।

मधुलिका ने पूछा–''जब तुम इतनी विपन्न अवस्था में हो तो फिर इतने सैनिकों को साथ रखने की क्या आवश्यकता है?''

''मधुलिका! बाहुबल ही तो वीरों की आजीविका है। ये मेरे जीवन–मरण के साथी हैं, भला मैं इन्हें कैसे छोड़ देता? और करता ही क्या?''

क्यों? हम लोग परिश्रम से कमाते और खाते हैं तो तुम .....।''

''भूल न करो; मैं अपने बाहुबल पर भरोसा करता हूँ। नए राज्य की स्थापना कर सकता हूँ, निराश क्यों हो जाऊँ? अरुण के शब्दों में कंपन था, वह जैसे कुछ कहना चाहता था, पर कह न सकता था।

''नवीन राज्य! ओहो! तुम्हारा उत्साह तो कम नहीं। भला कैसे? कोई ढंग बताओ तो मैं भी कल्पना का आनंद ले लूँ।

कल्पना का आनंद नहीं मधुलिका, मैं तुम्हें राजारानी के समान सिंहासन पर बिठाऊँगा! तुम अपने छिने हुए खेत की चिंता करके भयतीत हो।''

एक क्षण में सरल मधुलिका के मन में प्रमाद का अंधड़ बहने लगा, द्वंद्व मच गया। उसने सहसा कहा– ''आह मैं सचमुच आज तक तुम्हारी प्रतीक्षा करती थी, राजकुमार!''

अरुण ढिठाई से उसके हाथों को दबाकर बोला– ''तो मेरा भ्रम था, तुम सचमुच मुझे प्यार करती हो?''

युवती का वक्षस्थल फूल उठा, वह हाँ भी नहीं कह सकी, ना भी नहीं। अरुण ने उसकी अवस्था का अनुभव कर लिया। कुशल मनुष्य के समान उसके अवसर को हाथ से न जाने दिया। तुरंत बोल उठा– तुम्हारी इच्छा हो

तो प्राणों से पण लगाकर मैं तुम्हें इस कोशल सिंहासन पर बिठा दूँ। मधुलिके। अरुण के खड्ग का आतंक देखोगी?'' ''मधुलिका एक बार काँप उठी। वह कहना चाहती थी– नहीं; किन्तु उसके मुँह से निकला–''क्या?''

''सत्य मधुलिका, कोशल नरेश तभी से तुम्हारे लिए चिंतित हैं। यह मैं जानता हूँ, तुम्हारी साधारण–सी प्रार्थना वे अस्वीकार न करेंगे। और मुझे यह भी विदित है कि कोशल के सेनापति अधिकांश सैनिकों के साथ पहाड़ी दस्युओं का दमन करने के लिए बहुत दूर चले गए हैं।''

मधुलिका की आँखों के आगे बिजलियाँ हँसने लगीं। दारुण भावना से उसका मस्तक झंकृत हो उठा। अरुण ने कहा, ''तुम बोलती नहीं हो?''

''जो कहोगे वह करूँगी ।'' मंत्रमुग्ध–सी मधुलिका ने कहा।

000

स्वर्णमंच पर कोशल नरेश अर्द्धनिद्रित अवस्था में आँखें मुकुलित किए हैं। एक चामरधारिणी युवती पीछे खड़ी अपनी कलाई बड़ी कुशलता से घुमा रही है। चामर के शुभ्र आंदोलन उस कोष्ठ में धीरे–धीरे संचालित हो रहे हैं। तांबूल वाहिनी प्रतिमा के समान दूर खड़ी है।

प्रतिहारी ने आकर कहा– ''जय हो देव! एक स्त्री कुछ प्रार्थना करने आई है।''

आँखें खोलते हुए महाराज ने कहा–''स्त्री ! प्रार्थना करने आई है ? आने दो।''

प्रतिहारी के साथ मधुलिका आई। उसने प्रणाम किया। महाराज ने स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखा और कहा – 'तुम्हें कहीं देखा है?'

''तीन बरस हुए देव! मेरी भूमि खेती के लिए ली गई थी।''

''ओह! तो तुमने इतने दिन कष्ट में बिताए, आज उसका मूल्य माँगने आई हो, क्यों?

अच्छा–अच्छा तुम्हें मिलेगा। प्रतिहारी!''

''नहीं महाराज, मुझे मूल्य नहीं चाहिए।''

''मूर्ख! फिर क्या चाहिए?''

''उतनी ही भूमि, दुर्ग के दक्षिणी नाले के समीप की जंगली भूमि, वहीं मैं अपनी खेती करुँगी। मुझे एक सहायक मिल गया है। वह मनुष्यों से मेरी सहायता करेगा, भूमि को समतल भी तो बनाना होगा।''

महाराज ने कहा– ''कृषक बालिके! वह बड़ी ऊबड़–खाबड़ भूमि है। तिस पर वह दुर्ग के समीप एक सैनिक महत्व रखती है।''

''तो फिर निराश लौट जाऊँ?''

''सिंहमित्र की कन्या! मैं क्या करूँ? तुम्हारी यह प्रार्थना .....''

''देव! जैसी आज्ञा हो!''

''जाओ, तुम श्रवजीवियों को उसमें लगाओ। मैं अमात्य को आज्ञापत्र देने का आदेश करता हूँ।'' '

जय हो देव! – कहकर प्रणाम करती हुई मधुलिका राज मंदिर के बाहर आई।

दुर्ग के दक्षिण, भयावने नाले के तट पर, घना जंगल है। आज मनुष्यों के पद संचार से शून्यता भंग हो रही थी। अरुण के छिपे हुए मनुष्य स्वतंत्रता से इधर–उधर घूमते थे। झाड़ियों को काटकर पथ बन रहा था। नगर दूर था, फिर उधर यों ही कोई नहीं आता था। फिर अब तो महाराज की आज्ञा से वहाँ मधुलिका का अच्छा–सा खेत बन रहा था। तब इधर की किसको चिंता होती?

एक घने कुंज में अरुण और मधुलिका एक–दूसरे को हर्षित नेत्रों से देख रहे थे। संध्या हो चली थी। उस निविड़ वन में उन नवागत मनुष्यों को देखकर पक्षीगण अपने नीड़ को लौटते हुए अधिक कोलाहल कर रहे थे।

प्रसन्नता से अरुण की आँखें चमक उठीं। सूर्य की अंतिम किरणें झुरमुट में घुसकर मधुलिका के कपोलों से खेलने लगीं। अरुण ने कहा–''चार प्रहर और विश्राम करो, प्रभात में ही इस जीर्ण कलेवर कोशल राष्ट्र की राजधानी श्रावस्ती में तुम्हारा अभिषेक होगा और मगध से निर्वासित मैं एक स्वतंत्र राष्ट्र का अधिपति बनूँगा मधुलिके!''

''भयानक! अरुण, तुम्हारा साहस देख मैं चकित हो रही हूँ। केवल सौ सैनिकों से तुम.....''

''रात के तीसरे प्रहर में मेरी विजय यात्रा होगी।''

''तो तुमको इस विजय पर विश्वास है?''

''अवश्य! तुम अपनी झोपड़ी में यह रात बिताओ; प्रभात से तो राज मंदिर ही तुम्हारी लीला निकेतन बनेगा।

मधुलिका प्रसन्न थी; किन्तु अरुण के लिए उसकी कल्याण कामना सशंक थी। वह कभी–कभी उद्विग्न–सी होकर बालकों के समान प्रश्न कर बैठती। अरुण उसका समाधान कर देता। सहसा कोई संकेत पाकर उसने कहा–''अच्छा अंधकार अधिक हो गया। अभी तुम्हें दूर जाना है और मुझे भी प्राणपण से इस अभियान के प्रारंभिक कार्यो को अर्धरात्रि तक पूरा कर लेना चाहिए; तब रात्रि भर के लिए विदा मधुलिके!''

मधुलिका उठ खड़ी हुई। कँटीली झाड़ियों से उलझती हुई क्रम से बढ़ने वाले अंधकार में वह झोपड़ी की ओर चली।

000

पथ अंधकारमय था और मधुलिका का हृदय भी निविड़तम से घिरा था। उसका मन सहसा विचलित हो उठा, मधुरता नष्ट हो गई। जितनी सुख–कल्पना थी, वह जैसे अंधकार में विलीन होने लगी। वह भयभीत थी, पहला भय उसे अरुण के लिए उत्पन्न हुआ, यदि वह सफल न हुआ तो? फिर सहसा सोचने लगी– वह क्यों सफल हो? श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाए? मगध कोशल का चिर शत्रु! ओह उसकी विजय! कौशल नरेश ने क्या कहा था–'सिंहमित्र की कन्या।' सिंहमित्र, कोशल का रक्षक वीर, उसी की कन्या आज क्या करने जा रही है? नहीं,नहीं। 'मधुलिका! मधुलिका!' जैसे उसके पिता उस अंधकार में पुकार रहे थे। वह पगली की तरह चिल्ला उठी। रास्ता भूल गई।

एक रात पहर बीत चली, पर मधुलिका अपनी झोंपड़ी तक न पहुँची। वह उधेड़बुन में विक्षिप्त–सी चली जा रही थी। उसकी आँखों के सामने कभी सिंहमित्र और कभी अरुण की मूर्ति अंधकार में चित्रित होती जाती। उसे सामने आलोक दिखाई पड़ा। वह बीच पथ से खड़ी हो गई। प्रायः एक सौ उल्काधारी अश्वारोही चले आ रहे थे और आगे–आगे एक वीर अधेड़ सैनिक था। उसके बाएँ हाथ में अश्व की वल्गा और दाहिने हाथ में नग्न खड्ग। अत्यंत धीरता से वह टुकड़ी अपने पथ में चल रही थी परन्तु मधुलिका बीच पथ से हिली नहीं। प्रमुख सैनिक पास आ गया; पर मधुलिका अब भी नहीं हटी। सैनिक ने अश्व रोककर कहा। –''कौन? कोई उत्तर नहीं मिला। तब तक दूसरे अश्वरोही ने कड़ककर कहा''तू कौन है स्त्री?'' कोशल के सेनापति को उत्तर शीघ्र दे।''

रमणी जैसे विकार ग्रस्त स्वर में चिल्ला उठी –''बाँध लो मुझे। मेरी हत्या करो। मैंने अपराध ही ऐसा किया है।''

सेनापति हँस पड़े, बोले–''पगली है।''

''पगली नहीं, यदि पगली होती, तो इतनी विचार वेदना क्यों होती? सेनापति, मुझे बाँध लो। राजा के पास ले चलो।''

''क्या है, स्पष्ट कह!''

''श्रावस्ती का दुर्ग एक प्रहर में दस्युओं के हस्तगत हो जाएगा। दक्षिणी नाले के पार उनका आक्रमण होगा।'' सेनापति चौंक उठे। उन्होनें आश्चर्य से पूछा–''तू क्या कह रही है?'' ''मैं सत्य कह रही हूँ; शीघ्रता करो।''

सेनापति ने अस्सी सैनिकों को नाले की ओर धीरे–धीरे बढ़ने की आज्ञा दी और स्वयं बीच अश्वारोहियों के साथ दुर्ग की ओर बढ़े। मधुलिका एक अश्वारोही के साथ बाँध दी गई।

000

श्रावस्ती का दुर्ग, कोशल राष्ट्र का केन्द्र, इस रात्रि में अपने विगत वैभव का स्वप्न देख रहा था। भिन्न राजवंशों ने उसके प्रांतों पर अधिकार जमा लिया है। अब वह केवल कई गाँवों का अधिपति है फिर भी उसके साथ कोशल के अतीत की स्वर्ण गाथाएँ लिपटी हैं। वही लोगों की ईर्ष्या का कारण है। जब थोड़े से अश्वारोही बड़े वेग से आते हुए दुर्ग द्वार पर रुके तब दुर्ग के प्रहरी चौंक उठे। उल्का के आलोक में उन्होनें सेनापति को पहचाना, द्वार खुला। सेनापति घोड़े की पीठ से उतरे। उन्होनें कहा–''अग्निसेन! दुर्ग में कितने सैनिक होंगे?''

''सेनापति की जय हो! दो सौ।''

उन्हें शीघ्र ही एकत्र करो; परंतु बिना किसी शब्द के। सौ को लेकर तुम शीघ्र ही चुपचाप दुर्ग के दक्षिण की ओर चलो। आलोक और शब्द न हो।

सेनापति ने मधुलिका की ओर देखा। वह खोल दी गई। उसे अपने पीछे आने का संकेत कर सेनापति राज मंदिर की ओर बढ़े। प्रतिहारी ने सेनापति को देखते ही महाराज को सावधान किया। वह अपनी सुख निद्रा के लिए प्रस्तुत हो रहे थे; किन्तु सेनापति और साथ ही मधुलिका को देखते ही चंचल हो उठे। सेनापति ने कहा ''जय हो देव! इस स्त्री के कारण मुझे इस समय उपस्थित होना पड़ा है।''

महाराज ने स्थिर नेत्रों से देखकर कहा –''सिंहमित्र की कन्या फिर यहाँ क्यों? क्या तुम्हारा क्षेत्र नहीं बन रहा है? कोई बाधा? सेनापति! मैंने दुर्ग के दक्षिणी नाले के समीप की भूमि इसे दी है। क्या उसी संबंध में तुम कहना चाहते हो?''

''देव! किसी गुप्त शत्रु ने उसी ओर से आज की रात में दुर्ग पर अधिकार कर लेने का प्रबंध किया है और इसी स्त्री ने मुझे पथ में यह संदेश दिया है।''

राजा ने मधुलिका की ओर देखा। वह काँप उठी। घृणा और लज्जा से वह गड़ी जा रही थी। राजा ने पूछा–''मधुलिका, यह सत्य है?''

''हाँ देव!''

राजा ने सेनापति से कहा–''सैनिकों को एकत्र करके तुम चलो, मैं अभी आता हूँ।'' सेनापति के चले जाने पर राजा ने कहा–''सिंहमित्र की कन्या! तुमने एक बार फिर कोशल का उपकार किया। यह सूचना देकर तुमने पुरस्कार का काम किया है। अच्छा, तुम यहीं ठहरो। पहले उन आततायियों का प्रबंध कर लूँ।

अपने साहसिक अभियान में अरुण बंदी हुआ और दुर्ग उल्का के आलोक में अतिरंजित हो गया। भीड़ ने जयघोष किया। सबके मन में उल्लास था। श्रावस्ती दुर्ग आज एक दस्यु के हाथ में जाने से बचा। आबाल वृद्ध, नारी आनंद से उन्मत्त हो उठे।

उषा के आलोक में सभा मण्डप दर्शकों से भर गया। बन्दी अरुण को देखते ही जनता ने रोष से हुंकार करते हुए कहा –''वध करो!'' राजा ने सबसे सहमत होकर आज्ञा दी। ''प्राणदंड!'' मधुलिका बुलाई गई। वह पगली–सी आकर खड़ी हो गई। कोशल नरेश ने पूछा–''मधुलिका, तुझे जो पुरस्कार लेना हो, माँग।'' वह चुप रही।

राजा ने कहा– ''मेरी निज में जितनी खेती है, मैं सब तुझे देता हूँ।'' मधुलिका ने एक बार बंदी अरुण की ओर देखा। उसने कहा–''मुझे कुछ न चाहिए। अरुण हँस पड़ा। राजा ने कहा–''नहीं मैं तुझे अवश्य दूँगा। माँग ले।''

''तो मुझे भी प्राणदंड मिले।'' कहती हुई वह बंदी अरुण के पास जा खड़ी हुई।

शब्दार्थ

निरभ्र–बादलों से रहित, **उर्वरा भूमि**–उपजाऊ भूमि, **हेम–**स्वर्ण, **अनुरंजित**–रँगा हुआ, **कौशेय**–गेरुवा, **ऊर्जस्वित** –ऊर्जा से भरी हुई, **अनुग्रह**–कृपा, **तुरंग**–घोड़ा, **दस्यु**–डाकू, **निविड़**–घना, **विक्षिप्त**–पागल, **आलोक–**प्रकाश, **उपकार**–भलाई, **उल्का–**मशाल, तारा, **आततायी**–अत्याचारी, **स्वस्त्ययन–** कल्याणार्थ मंगल कामना ।

अभ्यास

पाठ से

1. कोशल में आयोजित होने वाले उत्सव के परंपरागत नियम क्या थे?
2. मधुलिका ने अपनी भूमि के बदले मिलने वाली राजकीय अनुग्रह को अस्वीकार कर किस प्रकार के जीवन निर्वाह को चुना और क्यों?
3. दुर्ग पर अरुण के गुप्त आक्रमण की सूचना सेनापति को देकर मधुलिका ने अपने प्रेम के प्रति विश्वासघात का कार्य किया अथवा उत्कृष्ट नागरिकता का परिचय दिया? उपयुक्त उदाहरण देकर अपने मत का समर्थन कीजिए।
4. मधुलिका ने पुरस्कार के रूप में राजा से प्राणदंड क्यों माँगा एवं स्वयं बंदी अरुण के पास क्यों जा खड़ी हुई?
5. ''पुरस्कार कहानी प्रेम और संघर्ष का अनूठा उदाहरण है।'' इस कथन के पक्ष में अपने विचार दीजिए।
6. भाव स्पष्ट कीजिए :–
   (क) ''मधुलिका की आँखों के आगे बिजलियाँ हँसने लगीं, दारुण भावना से उसका मस्तिष्क झंकृत हो उठा।''
   (ख) ''जीवन में सामंजस्य बनाए रखने वाले उपकरण तो अपनी सीमा निर्धारित रखते हैं परन्तु उनकी आवश्यकता और कल्पना, भावना के साथ बढ़ती–घटती रहती है।''
   (ग) उपरोक्त कथन को एक उदाहरण के माध्यम से भी स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

1. सभा विसर्जन के बाद मधुलिका सबकी दृष्टि से ओझल हो गई। उस समय उसकी मनःस्थिति कैसी रही होगी? सोचकर लिखिए।
2. पुरस्कार नामक इस कहानी का नाट्य–रूपान्तर कर कक्षा में मंचन कीजिए।
3. 'कोशल का कृषि महोत्सव भारतीय जन–जीवन में श्रम की स्थापना करता है।' इस कथन के आधार पर भारत की सामाजिक व्यवस्था में श्रम के महत्व का प्रतिपादन कीजिए।
4. ''मधुलिका की आँखों के सामने कभी सिंहमित्र और कभी अरुण की मूर्ति अंधकार में चित्रित होती जाती।'' उसकी यह स्थिति उसके मानसिक द्वंद्व को दर्शाती है। यह द्वंद्व आपको किस प्रकार प्रभावित करता है?

भाषा के बारे में

1. 'पुरस्कार' नामक यह पाठ गद्य की विधा कहानी के अंतर्गत आता है। कथावस्तु, चरित्र–चित्रण अथवा पात्र, कथोपथन, देशकाल अथवा वातावरण, उद्देश्य, शैली शिल्प ये कहानी के अनिवार्य तत्व होते हैं। इस कहानी में ये तत्व किस रूप में आए हैं? उदाहरण देकर इस पाठ के कहानी होने की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

2. जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं। उन्हें मूलतः प्रेम का कवि माना जाता है। मानवता और मानवीय भावनाओं का चित्रण उन्होंने अनेक स्थलों पर किया है। उनकी रचनाओं में तत्सम शब्दों की बहुलता देखी जा सकती है। प्रतीकात्मकता तथा बिम्ब विधान उनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं। छोटे–छोटे वाक्यों में गम्भीर भाव भरना, उसमें संगीत और लय का विधान करना उनकी शैली को सरस, स्वाभाविक, प्रवाहपूर्ण, ओजमयी और चुटीली बनाता है। पाठ के आधार पर प्रसाद जी की भाषा–शैली की उक्त विशेषताओं को कहानी में आए अंशों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए रेखांकित कीजिए।

3. वह शब्द जिसे संस्कृत भाषा से लेकर हिन्दी में ज्यों का त्यों प्रयुक्त किया जाता है, तत्सम शब्द कहलाता है:– उदाहरण प्रहर, स्वर्ण, कृषक इस पाठ में इन शब्दों का बहुलता से प्रयोग हुआ है। इन्हें ढूँढ़िए और शिक्षक की मदद से उनके तद्भव रूप को लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. इस कहानी में जिस प्रकार कोशल के उत्सव का उल्लेख हुआ है उसी प्रकार आपके अंचल/प्रदेश में भी कोई उत्सव प्रचलित होगा। घर के बड़े–बुजुर्गों से जानकारी प्राप्त कर उसका लेखन कीजिए।

2. 'पुरस्कार' नामक इस कहानी में बहुत सारे ऐतिहासिक स्थलों के नाम आए हैं। भारत के नक्शे में इनका विस्तार कहाँ से कहाँ तक था एवं वर्तमान में इन्हें किन नामों से जाना जाता है? पता लगाइए और लिखिए।

3. पाठ में 'चार प्रहर' शब्द का उल्लेख आया है–

   (क) प्राचीन काल में एक दिन में चौबीस घंटे को आठ हिस्सों में बाँटा गया था, जिसे हम समय की इकाई 'प्रहर' के नाम से जानते हैं। अपने शिक्षक की मदद से उक्त आठों प्रहरों के नाम एवं उनके समय विषयक जानकारी एकत्र करके लिखिए।

   (ख) संगीत में भी इन प्रहरों के आधार पर अलग–अलग रागों के गायन का विधान है, उन्हें भी जानिए।